UNIVERSITY NEWS ON 11 JANUARY 2026

DAINIK JAGRAN

संचार क्रांति ने खत्म की दूरी, विचार अब सेकेंड में लांघ जाते हैं सीमाएं

जागरण संवाददाता, लखनऊ : एआइ के टूल्स पर मिलने वाली गलत जानकारियों की चिंता और डिजिटल क्रांति में बढ़ती हिंदी की हिस्सेदारी। ऐसे बिंदुओं पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने युवाओं को डिजिटल हिंदी संचार माध्यमों के भविष्य और उसकी चुनौतियों से सजग किया। मौका था लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में प्रवासी भारतीय दिवस और विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित हिंदी का प्रवासी : प्रवासी की हिंदी विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का। डिजिटल हिंदी संचार : भविष्य एवं चुनौतियां विषय पर चर्चा करते हुए लविवि के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. पुनीत मिश्र ने कहा कि संचार क्रांति ने दूरी को दूरी नहीं रहने दिया। विचार अब सेकेंड में सीमाएं लांघ जाते हैं। संचार क्रांति ने भाषा को स्थानीय से वैश्विक बना दिया। अब हर भाषा की आवाज विश्व तक पहुंच सकती है।

प्रो. पुनीत मिश्र ने आगे कहा कि डिजिटल क्रांति ने भाषा और संचार दोनों की प्रगति को बदला है। भारत में इंटरनेट, स्मार्ट फोन और सस्ते इंटरनेट डाटा के कारण हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं की संख्या बहुत तेजी से बढ़ गई है। इंटरनेट मीडिया पर हिंदी सामग्री की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है।

यूट्यूब, फेसबुक, वाट्सअप, एक्स या इंस्टाग्राम की बात करें तो इन सारे प्लेटफार्म पर मनोरंजन से लेकर शिक्षा और समाचार तक हिंदी सशक्त रूप में दिखाई दे रही है। चीन की ग्वांगझ विश्वविद्यालय के पूर्व विजिटिंग प्रोफेसर गंगा प्रसाद शर्मा गुणशेखर ने कहा कि हिंदी के जानने वाले जो लोग हैं, वह डिजिटल जानकारी कम रखते हैं। इसका कारण जनरेशन गैप है। छोटा पांच साल का बच्चा भी डिजिटल की जितनी जानकारी रखता है, उतना 50 या 60 साल से अधिक उम्र के लोग नहीं रखते हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डा. ज्ञान प्रकाश मिश्र ने कहा कि अपनी भाषा का उपयोग कर इसी तरह आगे बढ़ेंगे तो भारत दुनिया की नंबर एक अर्थव्यवस्था होगी। इसमें डिजिटल क्रांति का सबसे बड़ा योगदान होगा। डिजिटल क्रांति के दौर में संवेदनाएं मर रही हैं। यह युवाओं के सामने चिंता का विषय है। डिजिटल क्रांति के दौर में दो पैर हैं, एक स्थिर है और दूसरा गतिमान। एक परंपरा है और दूसरा प्रगति। दोनों का समन्वय होना जरूरी है। अभिव्यक्ति-अनुभूति अंतरराष्ट्रीय आनलाइन पत्रिका व शारजाह की संपादक डा. पूर्णिमा वर्मन ने कहा कि डिजिटल युग में हिंदी का स्वरूप और उपयोग बदल रहा है। हालांकि हिंदी के प्रोफेसर भी अपने कंप्यूटर का विंडो डिस्प्ले अंग्रेजी में रखना पसंद करते हैं। आइआइएमटी मेरठ के पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नरेंद्र मिश्रा ने ज्ञान की तकनीक ने हमारी भाषा को ग्लोबल बना दिया है। दैनिक जागरण के राज्य संपादक आशुतोष शुक्ल ने सत्र की अध्यक्षता की।

लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में हिंदी विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में सम्मानित हुए छात्र-छात्राओं के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. महेंद्र नाथ पांडे, साथ में उपस्थित प्रो.अनिल शुक्ल, अपर मुख्य सचिव एल वेंकटेश्वर लू, अरविंद पांडे व प्रो.ओंकारनाथ उपाध्याय। कार्यक्रम को संबोधित करते डा.संत त्रिपाठी व प्रो.गंगाप्रसाद शर्मा गुणशेखर ● जागरण

गिरमिटिया अध्ययन केंद्र की हो स्थापना

समापन सत्र में पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. महेन्द्र नाथ पाण्डेय ने कहा कि विश्वविद्यालयों में गिरमिटिया अध्ययन केंद्र की स्थापना होना चाहिए। हिंदी का अपार भविष्य है। उन्होंने कहा कि प्रवासियों ने अपनी बोली में हिंदी का सहज विकास किया है। गिरमिटिया मजदूरों ने अपने स्व को अपनी भाषा को, अपनी बोली को, अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा। 'प्रवासी-आप्रवासी हिंदी लेखन' सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रिंटिंग एवं प्रकाशन विभाग भारत सरकार के पूर्व निदेशक रहे अरुण कुमार सिन्हा ने आज विश्व के 176 संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिंदी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। गाजीपुर पीजी कालेज के पूर्व आचार्य डा. राम नारायन तिवारी, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक डा. भावना सक्सेना, सकलडीहा पीजी कालेज चंदौली के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. संत त्रिपाठी, निदेशक पीसीएफ मनोज कुमार द्विवेदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

एक नजर में

निरीक्षण में मिली गंदगी

लखनऊ : लवि में चीफ प्रोवोस्ट प्रो. अनूप कुमार सिंह एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण टीम के सदस्यों ने शुक्रवार रात विभिन्न छात्रावासों का औचक निरीक्षण किया। टीम ने भोजन की गुणवत्ता एवं खाद्य सामग्री को चेक किया। चीफ प्रोवोस्ट ने बताया कि हबीबुल्लाह हास्टल के स्टोर में गंदगी पर कैटर्स को साफ-सफाई के आदेश दिए गए। यहां खाने का सामान इधर-उधर फैला था। अन्य छात्रावासों में भी किचन, भंडार गृह एवं भोजनालय में साफ सफाई देखी गई। (जासं)

मानवशास्त्र विभाग के प्रतिनिधियों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

जासं ● लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग की ओर से भारतीय पुरातत्व समाज, भारतीय प्रागैतिहासिक एवं चतुर्थक अध्ययन समाज व मानव पारिस्थितिकी समाज के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय संयुक्त वार्षिक सम्मेलन में शनिवार को कई सत्र आयोजित किए गए। एपी सेन हाल में उद्घाटन सत्र के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह ने अपने विचार रखे। प्रत्येक सत्र में 10 प्रतिनिधियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इनमें पुरातात्विक अन्वेषण, अप्रयुक्त स्थलों की संभावनाएं प्राचीन सामग्री के प्रति तोड़फोड़ और उपेक्षा की गंभीर समस्या, प्राचीन शस्त्रों एवं योद्धा संस्कृति का विशिष्ट अध्ययन, मुद्राशास्त्र (सिक्के) आदि पर चर्चा की गई।

AMRIT VICHAR

मंच पर उपस्थित पुरातत्व विद।

लविवि में देशभर के पुरातत्वविद ने की 'द्वितीय नगरीकरण' पर गहन चर्चा

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में सम्मेलन के दूसरे दिन देश के पुरातत्वविद और इतिहासकार भारत के 'द्वितीय नगरीकरण' काल पर गहन मंथन कर रहे हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन नृविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. यू.पी. सिंह ने किया। सम्मेलन के प्रत्येक सत्र में 10 शोधार्थियों ने अपने शोध प्रस्तुत किए। विशेषज्ञों ने प्राचीन धरोहरों के संरक्षण की गंभीर चिंता जताई और प्राचीन सामग्रियों की उपेक्षा, ऐतिहासिक स्थलों पर तोड़फोड़ को समस्या बताया। शोधकर्ताओं ने प्राचीन शस्त्र, योद्धा संस्कृति और मुद्राशास्त्र के माध्यम से तत्कालीन अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति पर नई जानकारी दी।

AMRIT VICHAR

आयोजन

लविवि में आयोजित प्रवासी भारतीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विदेशी छात्र हुए सम्मानित

प्रवासियों ने अपनी भाषा और संस्कृति से किया 'एग्रीमेंट'

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'हिन्दी का प्रवासी : प्रवासी की हिन्दी' का शनिवार को समापन हो गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय ने गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष को नमन करते हुए कहा कि प्रवासियों ने अपनी बोली में हिन्दी का सहज विकास किया है। उन्होंने विश्वविद्यालयों में 'गिरमिटिया अध्ययन केंद्र' की स्थापना के प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन किया।

संगोष्ठी के दौरान विशेषज्ञों ने कहा कि जो लोग गुलामी की जंजीरों में बंधकर विदेश गए, वे अपने साथ रामचरितमानस और अपनी संस्कृति ले गए थे। डॉ. संत त्रिपाठी ने कहा कि जो लोग कभी गुलाम बनाकर ले जाए गए थे, वे आज प्रभु राम की कृपा से उन देशों में राज कर रहे हैं। डॉ. भावना सक्सेना ने बताया कि प्रवासी लोग आज भी अपनी नई पीढ़ी को रामचरितमानस की शब्दावली से वर्णमाला सिखा रहे हैं। समारोह में अपर मुख्य सचिव वेंकटेशर लू, प्रो. विमलेशकांति वर्मा, प्रो. पवन अग्रवाल और प्रो. ओंकारनाथ उपाध्याय सहित कई विद्वान उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व केंद्रीय मंत्री व अन्य। अमृत विचार

इन्होंने भी रखे विचार

- **प्रो. अनिल शुक्ल :** भारत को भारत की नजर से देखा जाना चाहिए। गिरमिटिया प्रवासियों ने भारत की मिट्टी और संस्कृति से जो 'एग्रीमेंट' किया, उसे उनकी पीढ़ियां आज भी निभा रही हैं।
- **अरुण कुमार सिन्हा :** हिन्दी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। आज विश्व के 176 संस्थानों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है।
- **शारजाह की पूर्णिमा वर्मन :** तकनीकी के महासागर में हिन्दी के 'जहाजों' की कमी है, जिसे युवाओं को कड़ी मेहनत से पूरा करना होगा।

विदेशी छात्र हुए सम्मानित

- विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्ययनरत जर्मनी, पोलैंड, ताजिकिस्तान और श्रीलंका के विदेशी छात्रों को सम्मानित किया गया। पोलैंड की अन्ना और श्रीलंका की कलनी ने हिन्दी गीतों की प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

TOI

Khajuraho temples stand as marvels of ancient engineering

Anjanaya Singh | TNN

Experts highlight neglect of ancient materials

Lucknow: Long before modern engineering, cement, or earthquake-resistant designs existed, Indian architects of the 10th to 12th centuries were already constructing buildings capable of surviving earthquakes. The study also offers insights for modern-day architects.

The Khajuraho temples, built during the Chandela dynasty, stand as a striking example, remaining strong for nearly a thousand years despite natural tremors and human activity. These temples demonstrate how ancient builders blended art, culture, and practical experience to create structures that were both beautiful and resilient.

These techniques were discussed at the Joint Annual Conference on "Second Urbanisation", organised by the department of anthropology, Lucknow University, in collaboration with the Indian Archaeological Society, the Indian Society for Prehistoric and Quaternary Studies, and the History and Culture Society, on Saturday.

According to assistant professor at Rajendra Singh University, Allahabad, Manoj Kumar Verma, "Builders of that period carefully studied the land, soil, and natural forces around them. They understood how weight, balance, and material properties interacted. By raising temples on high stone plinths, they effectively created natural shock absorbers. Generations of observation and practical experience allowed them to design buildings that could withstand earthquakes without modern technology or scientific instruments. This is a lesson in how close observation of nature can guide safe and sustainable construction."

Lucknow: From archaeological explorations in Nalanda, Bhadohi, and Ramganga basin, to studies on Buddhist monastic development at Shravasti megalithic traditions, scholars presented their latest research at the three-day joint annual conference on 'Second Urbanisation' on Saturday.

Papers also examined Indo-Islamic architectural continuity in Old Delhi, Khajuraho temple engineering and earthquake resistance, and soil conservation practices in early societies. Delegates highlighted concerns such as vandalism, neglect of ancient materials, and urgent need to document unexplored archaeological sites.

Head, anthropology department, Prof UP Singh said, "The theme allows us to explore how archaeology, environment, material culture, and living traditions intersected to shape the growth, sustainability, and resilience of these settlements." TNN

HINDUSTAN

बीफार्मा, बीकॉम समेत छह पाठ्यक्रमों का परिणाम जारी

एलयू

लखनऊ, संवाददाता। एलयू में शैक्षिक सत्र 2025-26 विषम सेमेस्टर परीक्षा के तहत छह पाठ्यक्रमों का रिजल्ट जारी कर दिया गया है। इस बाबत परीक्षा नियंत्रक ने निर्देश जारी कर दिए हैं। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि बीकॉम पंचम सेमेस्टर, बीफार्मा, एमए फ्रेंच, आचार्य, एमपीएड और बीपीएड तृतीय सेमेस्टर का परीक्षाफल घोषित किया गया है।

छात्रावासों के खाने की गुणवत्ता का निरीक्षण

लखनऊ। एलयू में चीफ प्रोवोस्ट प्रो. अनूप कुमार सिंह और अधिष्ठाता छात्र कल्याण टीम के सदस्यों ने शुक्रवार रात सात से 10 बजे तक कई छात्रावासों का औचक निरीक्षण किया। टीम ने मुख्य रूप से भोजन की गुणवत्ता, खाद्य सामग्री को जांचा। कैटरर्स को आवश्यक सुझाव भी दिए। इसी के साथ किचन, भंडार गृह और भोजनालय में साफ सफाई का भी निरीक्षण किया।

लव जिहाद सबसे बड़ा अपराध : ऋतेश्वर

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के उमा हरिकृष्ण अवस्थी सभागार में प्रख्यात आध्यात्मिक गुरु और प्रखर वक्ता ऋतेश्वर महाराज ने पत्रकारों से बातचीत में कई मुद्दों पर बेबाक राय जाहिर की। मैकाले शिक्षा पद्धति की आलोचना की तो लव जिहाद को सबसे बड़ा घृणित्य कृत्य बताया। उन्होंने छात्रों से वैचारिक दासता त्याग कर स्वदेशी स्वदेशी बोध अपनाने की सलाह दी।

लव जिहाद सबसे बड़ा अपराध : ऋतेश्वर महाराज ने लव जिहाद को मानवता के विरुद्ध सबसे बड़ा अपराध और एक घृणित कृत्य बताया। उन्होंने युवाओं को अपने धर्म और संस्कारों से

आध्यात्मिक गुरु ऋतेश्वर महाराज।

मजबूती से जुड़े रहने की सीख दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि हम संकीर्ण सोच के लोग नहीं हैं, अल्पसंख्यक भी हमारे अपने हैं और देश की प्रगति में सबका साथ महत्वपूर्ण है।

पूजा पद्धतियां भले ही अलग, हमारे पूर्वज एक: उन्होंने कहा कि भारत को अलग से हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह आदि काल से ही हिन्दू राष्ट्र रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हम सभी के पूर्वज एक हैं, भले ही हमारी पूजा पद्धतियां अलग हो गई हों। जेएनयू और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारत को केवल मानसिक गुलामी दी है। उन्होंने छात्रों से इस वैचारिक दासता को त्यागकर स्वदेशी बोध अपनाने का आह्वान किया। इस दौरान प्रांत प्रचारक कौशल, विभाग प्रचारक अनिल, विधायक डॉ. नीरज बोरा, गोंडा सदर विधायक प्रतीक भूषण आदि रहे।

प्रवासियों ने हिन्दी का सहज विकास किया: डॉ. महेन्द्र

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, ग्लोबल गिरमिटिया काउंसिल वाराणसी और भारत सेवा ट्रस्ट वाराणसी की ओर से हिन्दी का प्रवासी: प्रवासी की हिन्दी विषयक दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

मालवीय सभागार में आयोजित समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय ने कहा कि हमें हमेशा कुछ सीखना चाहिए। धर्म और संस्कारों के लिए भारत ने अनेक बलिदान दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रवासियों ने अपनी बोली में हिन्दी का सहज विकास किया है। गिरमिटिया मजदूरों ने अपने स्व को अपनी भाषा, अपनी बोली, अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा।

विदेशी छात्रों का सम्मान

संगोष्ठी में हिन्दी विभाग में अध्ययनरत अन्यान्य देशों के विदेशी छात्रों को सम्मानित भी किया गया। इनमें जर्मनी से हिन्दी डिप्लोमा के छात्र जोहानस हॉफमैन, पोलैंड से हिन्दी में परास्नातक की छात्रा अन्ना नोविका, ताजिकिस्तान से खनिफा सैदोवा, पीएचडी हिंदी में श्रीलंका से नामांकित शोधार्थी आनंदा अबेसुंदरा, अंजना मुथु, कलनी पनागोडा शामिल रहीं।

AMAR UJALA

लविवि: परीक्षा परिणाम जारी

लखनऊ। लखनऊ विवि में शैक्षिक सत्र 2025-26 विषम सेमेस्टर परीक्षा के तहत छह पाठ्यक्रमों का परिणाम शनिवार को जारी किया गया। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि बीकॉम पंचम सेमेस्टर, बीफार्मा, एमए फ्रेंच, आचार्य, एमपीएड और बीपीएड तृतीय सेमेस्टर का परीक्षाफल घोषित किया गया है। वेबसाइट www.lkouniv.ac.in पर परिणाम देख सकते हैं। (संवाद)

आज आवेदन का अंतिम मौका

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय व संबद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग निजी कंपनियों में रोजगार पाने का अच्छा अवसर है। आवेदन के लिए https://on.tcs.com/4o183Mk-https://forms.gle/ejDeofoTxM5sLfjt9 पर रजिस्ट्रेशन करना होगा। (संवाद)

छात्रावासों में परखी खाने की गुणवत्ता

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में चीफ प्रोवोस्ट प्रो. अनूप कुमार सिंह और अधिष्ठाता छात्र कल्याण टीम के सदस्यों ने शुक्रवार रात सात से 10 बजे तक कई छात्रावासों का निरीक्षण किया। टीम ने मुख्य रूप से भोजन की गुणवत्ता, खाद्य सामग्री को जांचा। कैटरर्स को आवश्यक सुझाव दिए। इसी के साथ किचन, भंडार गृह और भोजनालय में साफ सफाई का भी निरीक्षण किया। (संवाद)

NBT

हिंदी के लिए विदेशी स्टूडेंट्स को मिला सम्मान

NBT रिपोर्ट, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से शनिवार को विश्व हिंदी दिवस पर संगोष्ठी व सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें पहली बार हिंदी के लिए विदेशी छात्रों को सम्मानित किया गया। पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय ने विदेशी छात्रों को सम्मानित किया। मौके पर विदेशी छात्रों ने हिंदी में गीत भी प्रस्तुत किए। डॉ. महेन्द्र नाथ पांडेय ने कहा कि प्रवासियों ने अपनी बोली में हिंदी का सहज विकास किया है। गिरमिटिया मजदूरों ने अपनी भाषा को, अपनी बोली को, अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा। विभागाध्यक्ष पवन अग्रवाल ने बताया कि हिंदी विभाग में विदेशी छात्रों के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। इस साल हिंदी में बेहतर करने वाले विदेशी छात्रों को सम्मानित किया गया है। इसमें जोहानस हॉफमैन (जर्मनी), अन्ना नोविका (पोलैंड), खनिफा सैदोवा (ताजिकिस्तान), आनंदा अबेसुंदरा (श्रीलंका), अंजना मुथु (श्रीलंका), कलनी पनागोडा (श्रीलंका), कंचना डी एलविस (श्रीलंका) को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एलयू के पूर्व कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल, अपर पुलिस आयुक्त लखनऊ जितेंद्र कुमार दूबे मौजूद रहे।

HINDUSTAN

लखनऊ विवि में विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में बोले पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय

हर विवि में हो गिरमिटिया अध्ययन केंद्र

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। आज भी गिरमिटिया मजदूरों ने अपने स्व, भाषा, बोली और संस्कृति को नहीं छोड़ा है। ऐसे में हर विश्वविद्यालय में गिरमिटिया अध्ययन केंद्र का होना बहुत जरूरी है। ये बात पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय ने कही। मौका था शनिवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवासी भारतीय दिवस व विश्व हिंदी दिवस के मौके पर ''हिंदी का प्रवासी व प्रवासी की हिंदी'' विषय पर आयोजित गोष्ठी का।

केंद्रीय प्रकाशन विभाग पूर्व निदेशक अरुण कुमार सिन्हा ने कहा कि जब कोई व्यक्ति अपना घर छोड़कर दूर देश जाता है तो वह अपनी भाषा और संस्कृति भी साथ ले जाता है। प्रवासी हिंदी उस स्मृति की भाषा है जो गिरमिटिया लोगों के साथ उनके आंसुओं, संघर्षों और रामचरितमानस के साथ निर्मित हुई। गृह मंत्रालय राजभाषा की सहायक निदेशक डॉ. भावना सक्सेना ने बताया कि अभिलेखागार में संकलित चिट्ठियों में प्रवासियों के दुख दर्ज हैं। सहकारिता विभाग के निदेशक मनोज कुमार द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार आशुतोष शुक्ल, बीएचयू के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्र, प्रो. गंगा प्रसाद शर्मा गुणशेखर, प्रो. नरेंद्र मिश्र, प्रो. पुनीत मिश्रा, डॉ. पूर्णिमा वर्मन ने अपने विचार रखे। समापन सत्र में मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, प्रो. अनिल शुक्ल, अपर पुलिस आयुक्त जितेंद्र कुमार दूबे मौजूद रहे।

संगोष्ठी में सम्मानित विदेशी विद्यार्थियों के साथ पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, प्रो. अनिल शुक्ल, अपर पुलिस आयुक्त जितेंद्र कुमार दूबे समेत अन्य मौजूद रहे। फोटो : लविवि

इन्हें मिला सम्मान

विश्व हिंदी दिवस पर हिंदी विभाग में अध्ययनरत विदेशी छात्रों को सम्मानित भी गया। इनमें हिंदी डिप्लोमा के छात्र जोहानस हॉफमैन (जर्मनी), हिंदी में परास्नातक की छात्राएं अन्ना नोविका (पोलैंड), खनिफा सैदोवा (ताजिकिस्तान), पीएचडी हिंदी में नामांकित शोधार्थी आनंदा अबेसुंदरा (श्रीलंका), अंजना मुथु (श्रीलंका), कलनी पनागोडा (श्रीलंका), कंचना डी एलविस (श्रीलंका)।